लड़का जिसे लफ्ज़ों से प्यार था

लेखन : रॉनी शॉटर, चित्र : गिसेल पॉटर

भाषान्तर : पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
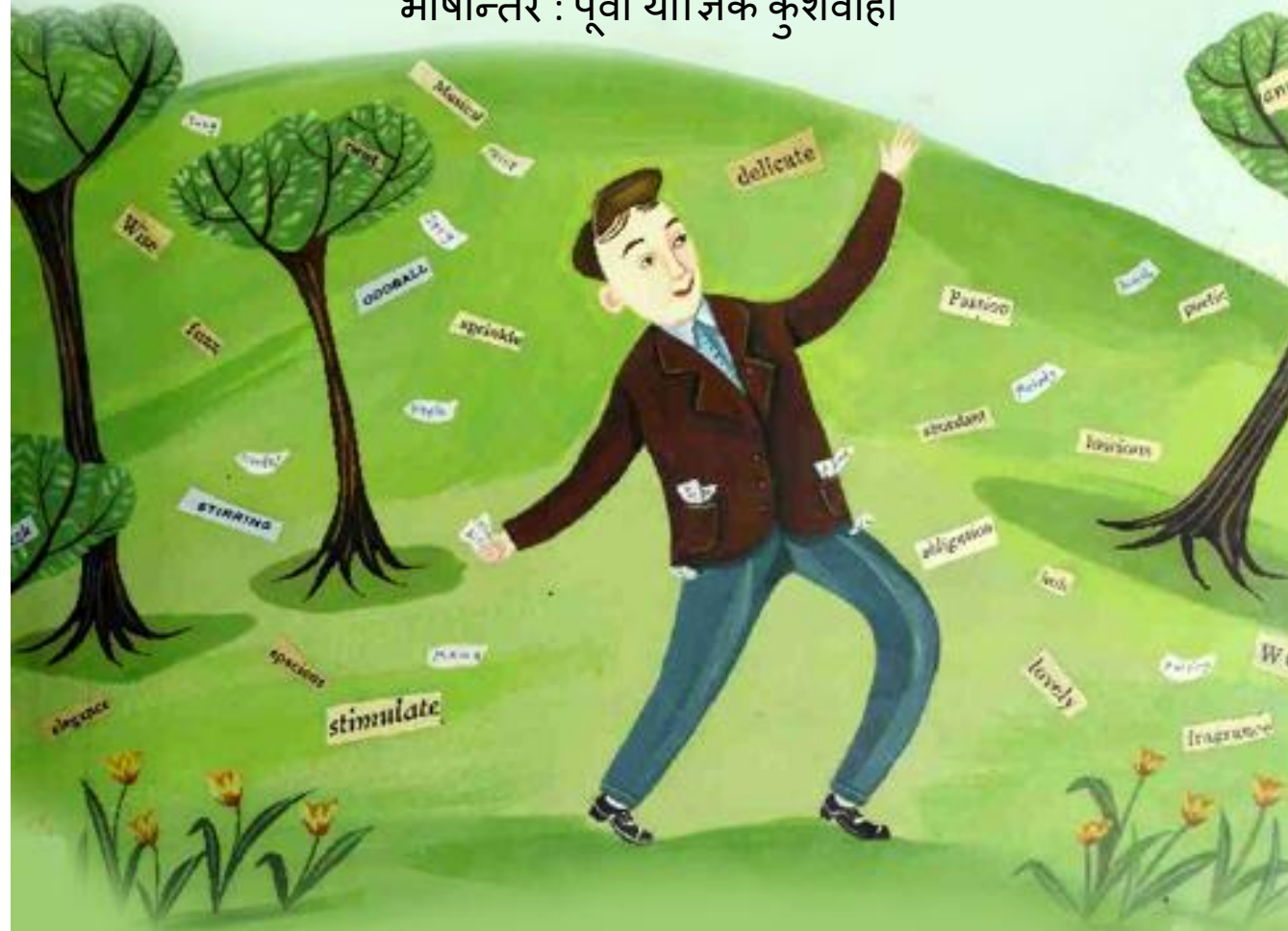
सेलिग को लफ्ज़ यानी शब्द, के बारे में सब कुछ से प्यार है, अपनी ज़बान पर उनके स्वाद से (*खुशमज़ा*), उसके कानों में वे जो फुसफुसाते हैं उससे (*खनक*), और सबसे ज़्यादा जिस तरह वे उसके दिल को खुश करते हैं (*गुदगुदी*) वह उन्हें किसी *भुक्खड़* की तरह इकट्ठा करता है, जैसे दूसरे लोग डाक टिकट या सीपियाँ जमा करते हैं।

पर इतने ढ़ेरों *रसीले* लफ्ज़ों का किया क्या जाए? शक-शुबह करने वालों से घिरा सेलिग एक सफर पर निकल जाता है, और पाता यह है कि हमेशा ही कोई न कोई - जैसे कोई कवि, नानफरोश या शायद आप ही, किसी खास शब्द की तलाश रहे होते हैं - जिन्हें वह पेश कर सकता है।

रॉनी शॉटर के इस मोहक किस्से में गिसेल पॉटर के अनूठे चित्रों की *भरमार* है, जो उसमें चार चाँद लगाते हैं। यह किस्सा भाषा का, लफ्ज़ों की सौगात का, उनके जोशो-खरोश का और एक लड़के की शब्द साझा करने की *लगन* का जश्न मनाता है।

अद्भुत शब्दकार / कलादेवी के अवतार,
रिचर्ड और स्मिथ के लिए - आर.एस.

पिया के लिए
जो हर दिन नए लफ्ज को इकट्ठा कर उन्हें बोलती है - जी.पी.
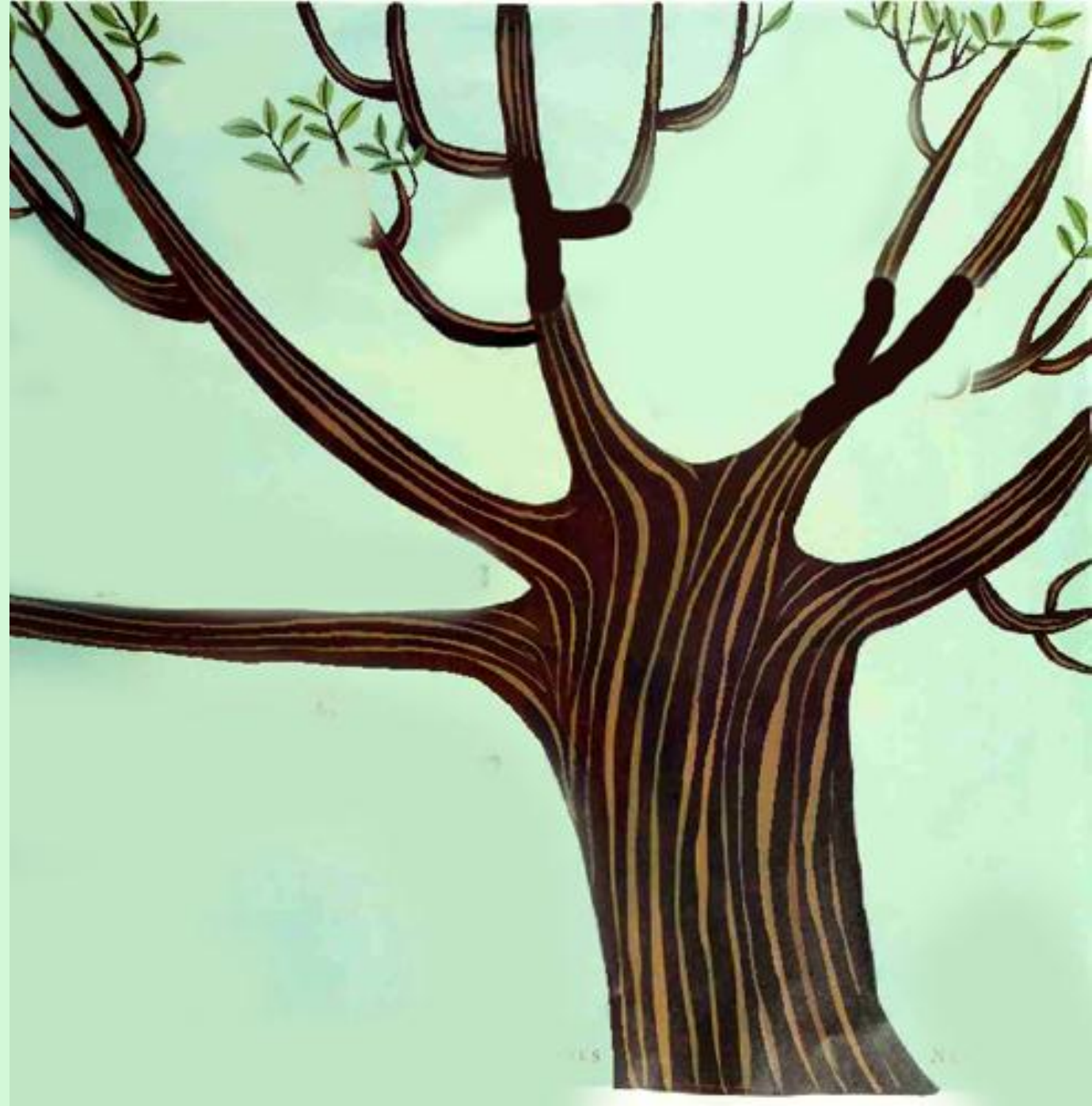
इस दुनिया में ऐसे तमाम लोग हैं जो पैदाइशी जमाखोर होते हैं। कुछ सीपियाँ या पत्थर जमा करते हैं। तो कुछ पंख इकट्ठा करते हैं। कुछ तो नन्ही चम्मचें तक। ऐसा ही एक है सेलिग। वह जमा करता है लफ़्ज़ों को।

सेलिग को शब्दों की हर चीज़ से प्यार था - अपने कानों में उनकी ध्वनि (*खनक*) से, ज़बान पर उनके स्वाद (*खुशमज़ा*) से, और जब वे रिस कर उसके दिमाग में पहुँचते तो उनसे मची *खलबली* से (*ओ माँ!*) और खास तौर से जब वे उसके दिल को छू जाते हैं (*पुलक!*)।

जब भी सेलिग कोई ऐसा लफ़्ज़ सुनता जो उसे पसन्द आता, वह ज़ोर से चीख कर उसे बोलता, कागज़ के पुर्जे पर उसे *दर्ज* करता, और तब अपनी जेब में उसे ठूंस देता ताकि वह सुरक्षित रहे। कमाल का *जमाखोर* था वह! सेलिग की जेबें लफ़्ज़ों से *लबालब* भरी रहतीं। पर नए शब्द वह अपनी कमीज़ के अन्दर रखता, अपने मोज़ों में भरता, आस्तीनों में ठूंसता और अपनी टोपी के नीचे भी।

जिस समय दूसरे बच्चे खुद को बल्लों, जालों और किस्म-किस्म की गेंदों में उलझाए रखते, सेलिग हमेशा *हाशिए* पर होता ... ध्यान से सुनते, *ज़ायकेदार* लफ्ज़ इकट्ठा करते।

सेलिग के पिता दुनियादार इन्सान थे, उनका का धंधा था मज़बूत जूते बेचना। वे सोचते रहते थे कि उनके बेटे के इस *अजीबो-गरीब* शौक से उसको भला क्या फायदा होगा।

और सेलिग की माँ पुराने खयालों वाली, भारी कद-काठी की बेहद प्यारी महिला थीं। वे इस फिक्र में डूबी रहतीं कि क्या उनका खूबसूरत बेटा कभी खुशी भी पा सकेगा? अपने हाथ घुमातीं वे फिक्र की *पवन-चक्की* थीं।
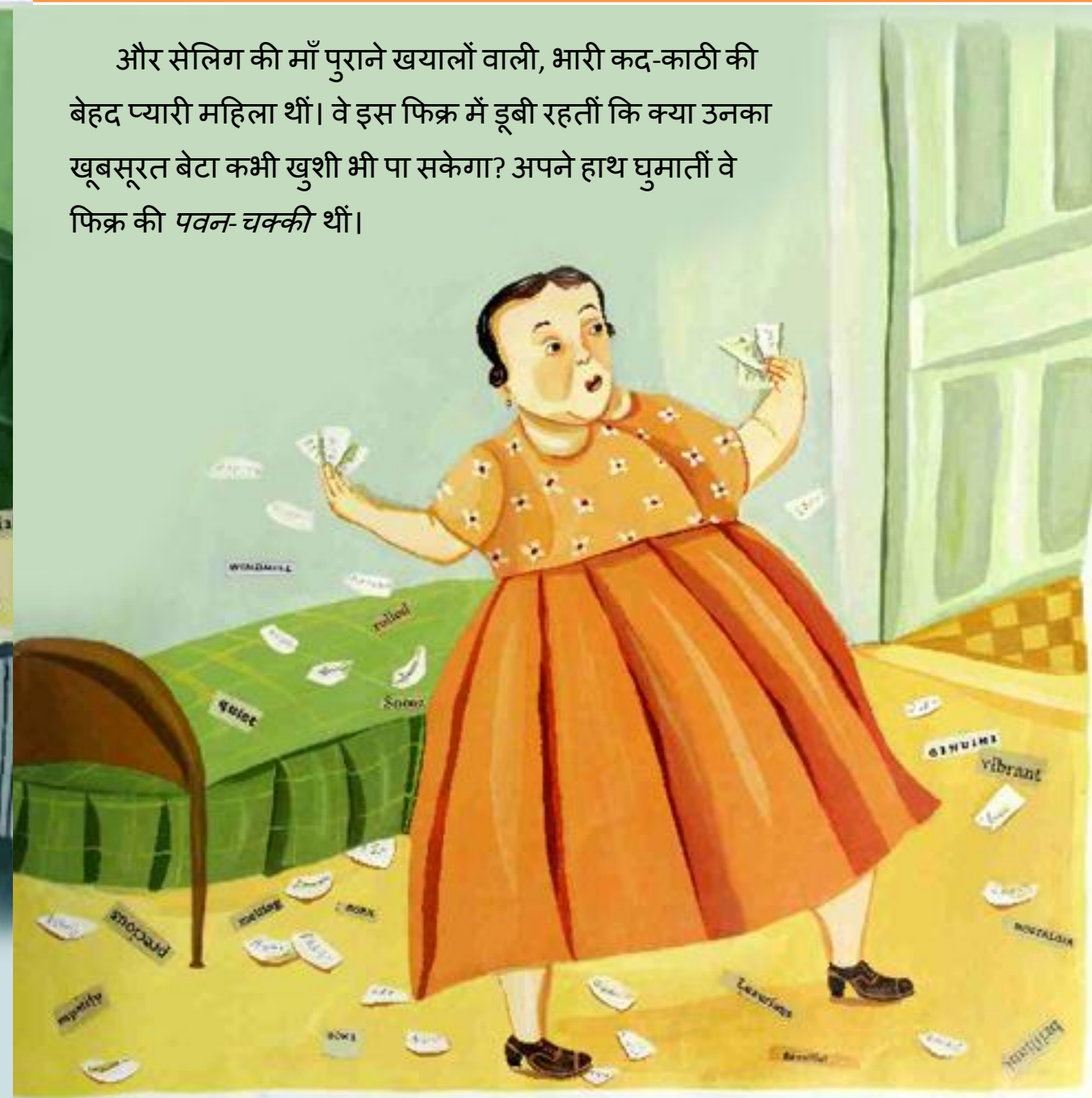
जैसे-जैसे समय गुज़रता गया, लोग सेलिग को एक नए नाम से पुकारने लगे: वर्डस्वर्थ! ‘ऐ वर्डस्वर्थ’ बच्चे ठिठियाते। ‘तुम्हारे ज़खीरे के लिए एक नया लफ्ज़ है - *सनकी!*‘

‘सनकी!’ सेलिग ने दोहराया। इस बेतुके से शब्द पर उसे हंसी आनी चाहिए थी, पर उसने उसके मन में अकेलेपन का अहसास जगाया।

एक रात सेलिग को एक सपना आया ... वह एक असाधारण सी दुकान के सामने निपट अकेला खड़ा था कि उसकी नज़र एक बड़े-से *दोहत्थे कलश* पर पड़ी। कौतूहल के मारे उसने कलश पर एक टप्पी लगाई। *हुश्श्श्श!* कलश में से एक साँवला, चक्कर खाता शख्स निकला। '*जिन!*' सेलिग अचरज से बोला, तब '*जीनी!* वह इन लज़ीज़ लफ्ज़ों को स्वाद लेते चीख पड़ा।

'क्या मांगता तुमकूं?' जीनी ने जानना चाहा। '*कोई दिली मुराद ?*'

कितनी अनजान और *ज़ायकेदार* ध्वनियाँ थीं। और कैसी पेशकश। तब सेलिग को अचानक ही अपनी इच्छा पता चल गई - उसे तो बस एक सवाल का जवाब चाहिए था। 'क्या जो लोग कहते हैं वह सच है? क्या मैं सचमें ... सनकी हूँ?'

'सनकी? धत्त! तुम तो वर्डस्वर्थ हो, लफ्ज़ों के दीवाने। तुमरे पास तो वो पहले से है जिसे लोग ज़िन्दगी भर खोजते फिरते हैं - एक *जोश,* एक *लगन* ! तुमकूं दरअसल जो मांगता है वह है एक *मकसद,* एक मिशन।' इतना कह जिन आगाह करने का एक भी शब्द बोले बिना गायब हो गया।

सेलिग अपने सपने से जागा - उसने *झटपट* अपना *पिट्ठू-झोला* तैयार किया। एक तकिया, एक कम्बल, कुछ सेब, शहद, शरबत और लफ्ज़ों का अपना पूरा ज़खीरा सहेज कर रखा। अब उसे मालूम था कि उसे क्या करना है। अपने मकसद को तलाशने के *पक्के इरादे* के साथ सेलिग निकल पड़ा।

अपने मकसद की खोज में उसकी *इन्द्रियाँ* मानो और पैनी हो गईं। हवा के झोंके से ट्यूलिप फूलों के *मटकने, ठुमकने* पर उसने गौर किया। यह भी कि शाम को झुटपुटे और सितारों के आने के ऐलान में रोशनी कैसे फीकी पड़ जाती है। *सांझ,* सेलिग ने इस छोटे और मनमोहक लफ़्ज़ को अपने कोश में जोड़ा।
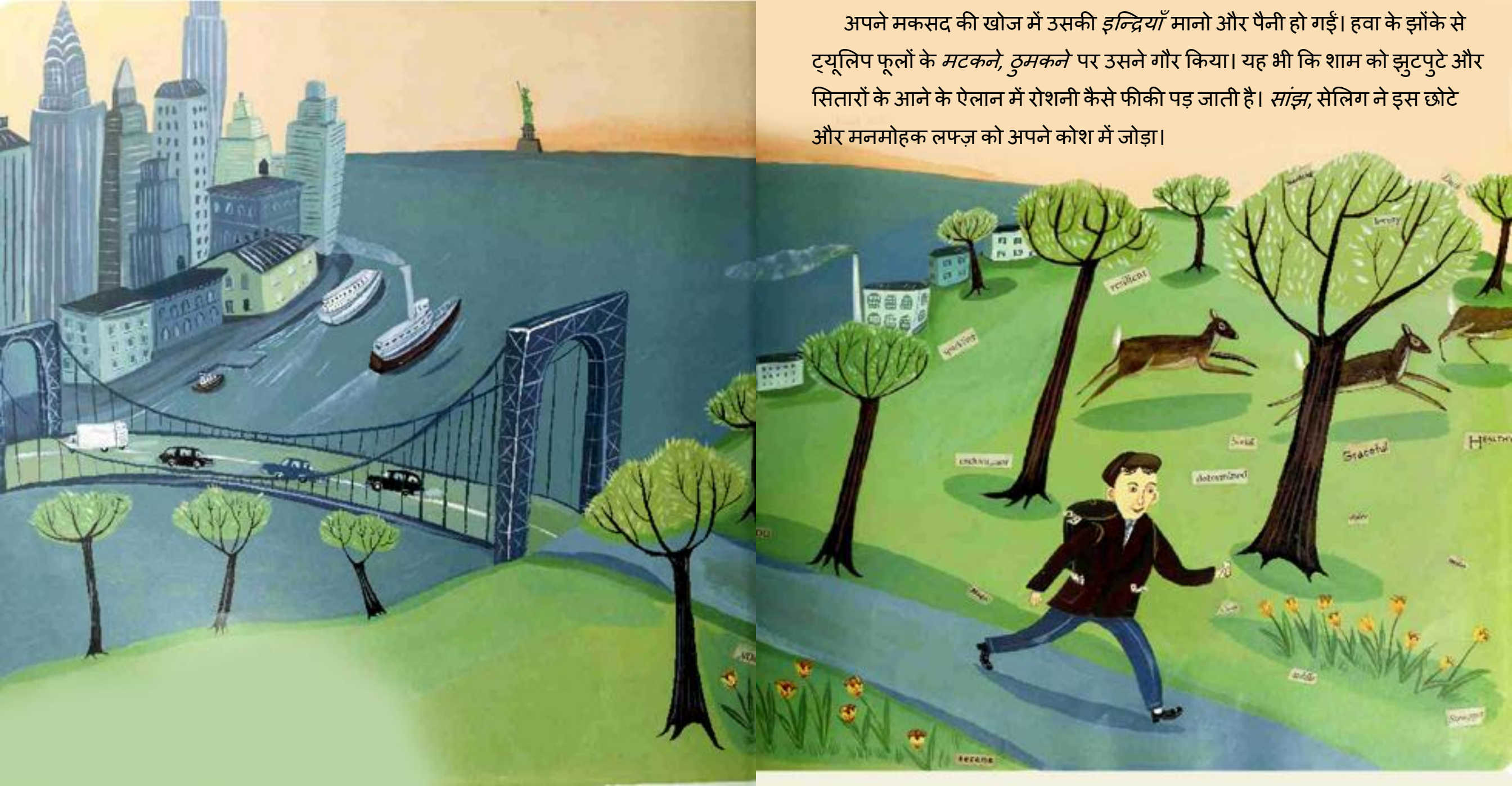
पर कुछ समय के बाद सेलिग के कदम धीमे पड़ने लगे, इतने सारे शब्दों के बोझ के साथ चलना मुश्किल से मुश्किलतर होने लगा। वह पैर *घिसटता, लस्त-पस्त* चल रहा था, जबकि वह खुशी से मस्त *डोलता, मटरगश्ती* करता आगे बढ़ सकता था। शायद उसे अपना बोझ कुछ हल्का कर लेना चाहिए। पर कैसे? क्या वह लफ़्ज़ों को फेंक दे? उन्हें फिज़ूल हो जाने दे? नामुमकिन! आखिर वे कीमती जो थे।

सेलिग इतना थक चुका था कि वह सोच तक नहीं पा रहा था। उसका पस्तहाल दिमाग सिर्फ एक ही बात सोच सकता था - *निंदिया,* कितना उम्दा शब्द था। पर हाय, वह इस कदर *उनींदा* था कि उसे लिख तक नहीं पाया।

सेलिग के सामने एक बड़ा-सा सुन्दर पेड़ था। उसने अपना जैकेट उतारा, जो उसकी माँ की बनाई भरवाँ स्ट्रूडल मिठाई की ही तरह शब्दों से ठुंसा हुआ था। तब उसने बड़े ही प्यार से एक-एक लफ़्ज़ को उसकी अपनी अलग डाल पर टांगा, मानो उन्हें रात के लिए बिस्तर पर सुला रहा हो।

शरबत का घूंट भर और शहद लगे सेब को कुतर सेलिग पेड़ पर वापस चढ़ा, दो शाखाओं के बीच जगह ढंढ़ वहाँ लेट गया। आरामदेह, उसने सोचा और फौरन ही सो गया। वहाँ सुख से सोते हुए उसने अपनी माँ, अपने मिशन और *मैकरून* के, जो उसके पसंदीदा बिस्कुट थे, सपने देखे।

रात के दौरान एक कवि, जो सही लफ्ज़ न मिलने के कारण सो नहीं पाया था, चहलकदमी करता ठीक उसी पेड़ के नीचे आ खड़ा हुआ और बेबसी से चाँद को ताकने लगा। वह बेचारा कई रातों से अपनी बात कह पाने के लिए सही शब्दों की तलाश में जूझता रहा था।

अचानक, जादूई तरीके से तेज़ चक्करदार हवा चल पड़ी। सेलिग के लफ्ज़ों में से चार अपनी शाखों से उड़ चले। आकाश की ओर हाथ उठाए खड़े कवि महाशय ने उन्हें मुट्ठी में पकड़ लिया। मैकरून को छोड़ उसने बाकी तीन मीठी गोली, नींबू और ज्येष्ठमध को कस कर भींचे रखा। तब उसने अपनी कॉपी पर लिखा 'आसमान पर पिघली नींबुई मीठी गोली की तरह चाँद।'

'अरे वाह!' कवि खुशी से चीखा। 'क्या खूब कहा है मैंने।'
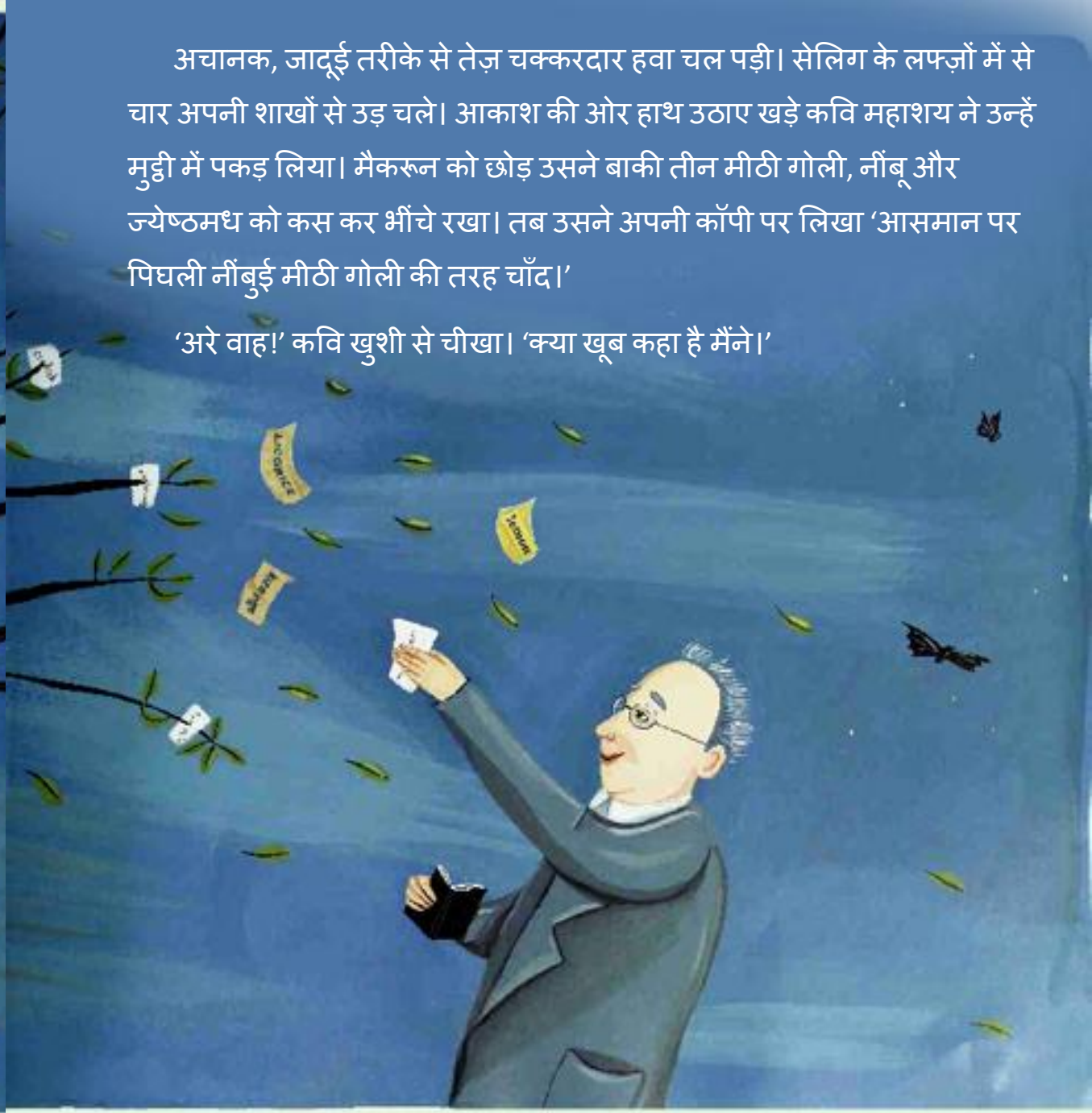
अगली सुबह सेलिग पंछियों और शब्दों के ऐसे संगीत से जागा जिसे *यशोगान* ही कहा जा सकता था। कवि अपनी नयी कविता का पाठ कर रहा था जिसमें सेलिग के लफ़्ज़ों की *भरमार* थी!
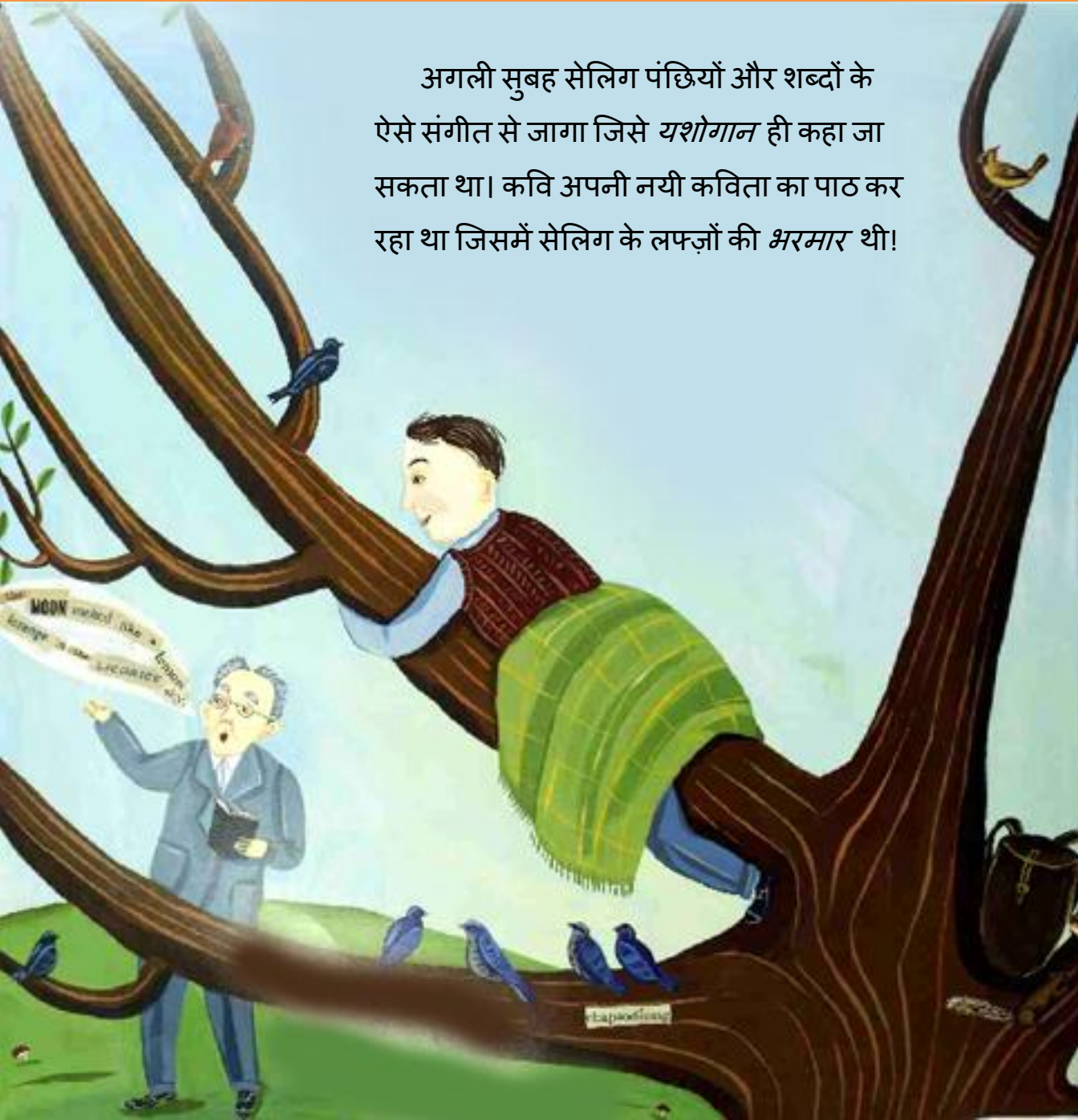
आँखों से नींद के कतरे रगड़ कर सेलिग पेड़ से नीचे उतरा और कवि को सलाम किया। 'आपकी कविता में' उसने कवि से कहा 'मेरे कुछ पसंदीदा शब्द हैं। आपने उनका बड़ी खूबसूरती से इस्तेमाल किया है।'

'शुक्रिया! पहली बार लफ़्ज़ मानो खुद ब खुद मेरे पास चले आए। सच कहता हूँ! कितना खुशनसीब हूँ मैं! तुम्हारा नाम क्या है? मैं यह कविता तुम्हारे नाम करना चाहता हूँ।

सेलिग पल भर हिचकिचाया। तब पहली बार उसने फख्र के साथ *ऐलान* किया, 'लोग मुझे वर्डस्वर्थ कहते हैं।'

और उसी पल सेलिग को अपने *मकसद* का अहसास भी हो गया। वह था शब्दों को फैलाना - दूसरों के साथ अपने लफ़्ज़ों को *साझा* करना।
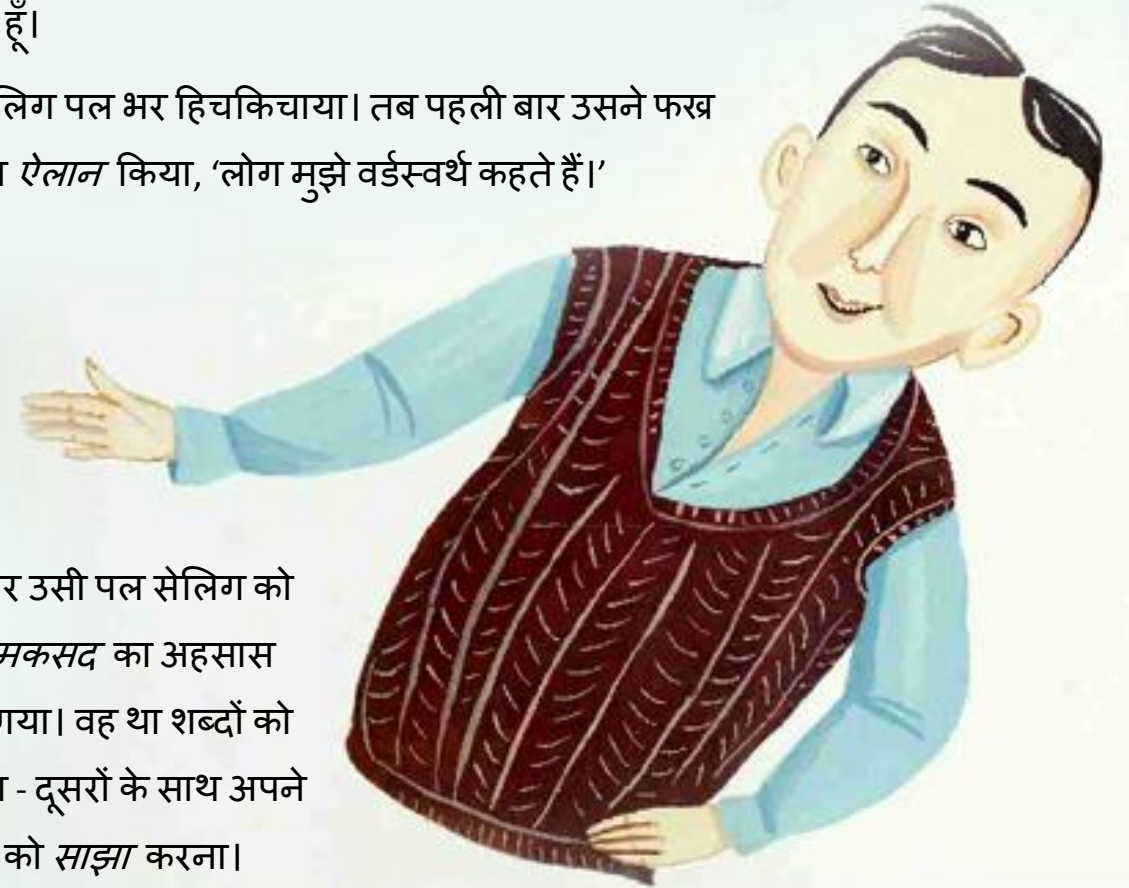
उस दिन से सेलिग के कदम हल्के-फुल्के हो गए, और मकसद को पूरा करने के *इरादे* से भर गए। शब्दों को तो वो हमेशा से ही जमा करता था, सो अब जब भी उसकी मर्ज़ी होती वह नए लफ्ज़ अपने भण्डार में जोड़ता। पर जैसे ही शब्दों का भार महसूस होता वह उनमें से कुछ को *बिखेरने, छितराने* और *छिड़कने* के लिए सही जगह ढूंढ़ लेता।
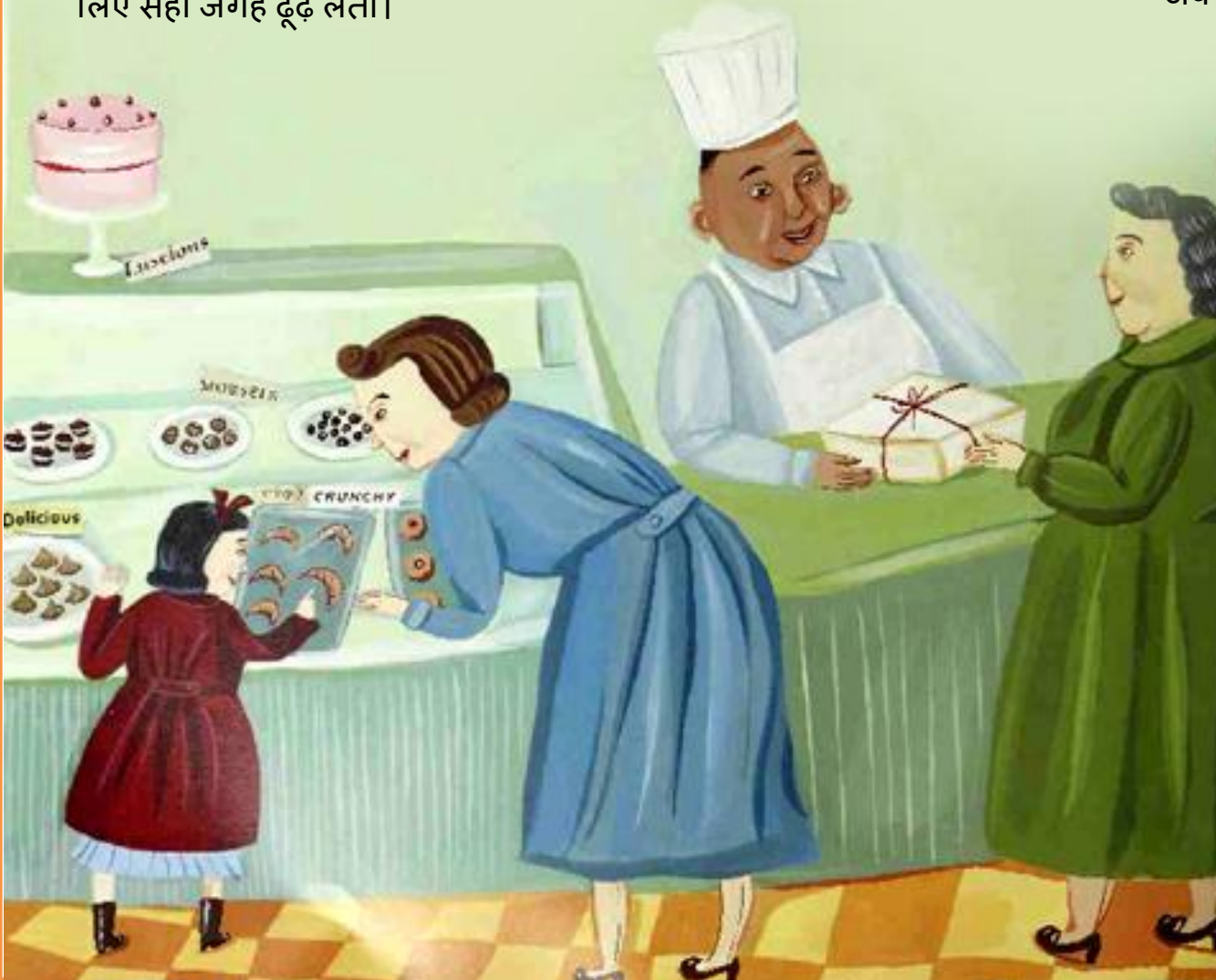
इस तरह एक नानफरोश ने, जिसकी हमेशा अनदेखी की जाती रही थी, एक दिन अचानक अपनी दुकान में भूखे ग्राहकों की भीड़ पाई। सेलिग वहाँ मैकरून बिस्कुट लेने गया था, नानफरोश की पीठ मुड़ी देख उसने अपने कुछ पसंदीदा शब्द हवा में उछाल दिए। *खस्ता* और *कुरकरा*, जाकर कुलचों के पास गिरे, रागी की डबलरोटी के पास गिरा *शानदार* , और परतदार केक के पास *लज़ीज़* जा टिका। जब नानफरोश अपने *पेटू* ग्राहकों की ओर वापस मुड़ा उसके मुँह से बरबस निकला 'कसम से! कितना खुशनसीब हूँ मैं!'

पडौसियों को यह अहसास कि वे अपास में लड़-झगड़ रहे हैं, तब जाकर हुआ जब *बतंगड़, गुलगपाड़ा,* और *बकझक* जैसे लफ्ज़ उन पर बरसने लगे।

पर जल्द ही सेलिग ने उन्हें शांत हो एक-दूसरे को स्नेह से ताकते तब देखा जब उसने *चुप्पी, भाईचारा* और *याराना* जैसे शब्द उनकी ओर उछाले।

और यों मुँहज़बानी ही एक किंवदन्ति शुरू हो गई ... जब किसीको अचानक कोई सही शब्द सूझ जाता तो वे फुसफुसाते 'ज़रूर वर्डसवर्थ होगा।' या फिर 'वह यहीं करीब ही है,' वे जानकारों की तरह सिर हिलाते कहते। 'कसम से! हम कितने खुशनसीब हैं!'

यों सालों गुज़रते गए। सेलिग जवान हो गया था पर वह एक किंवदन्ति भी था। हालांकि उसका काम उसे बेइन्तहा खुशी देता था, फिर भी उसे लगने लगा कि वह बेहद अकेला है। *'एकाकी'* उसने गहरी सांस भरते हुए कहा।

एक दिन जब सेलिग एक बुढ़ाते, नाखुश मर्द को देख उसकी ओर *फुरतीला, जोशीला* जैसे लफ्ज़ दाग रहा था, कि हवा में एक अकेला, *फड़कता* हसीन सुर उसकी ओर तिरता आया और सीधे उसके दिल में पैठ गया। *'दिलकश!'* उसके मुँह से बरबस ही निकला।
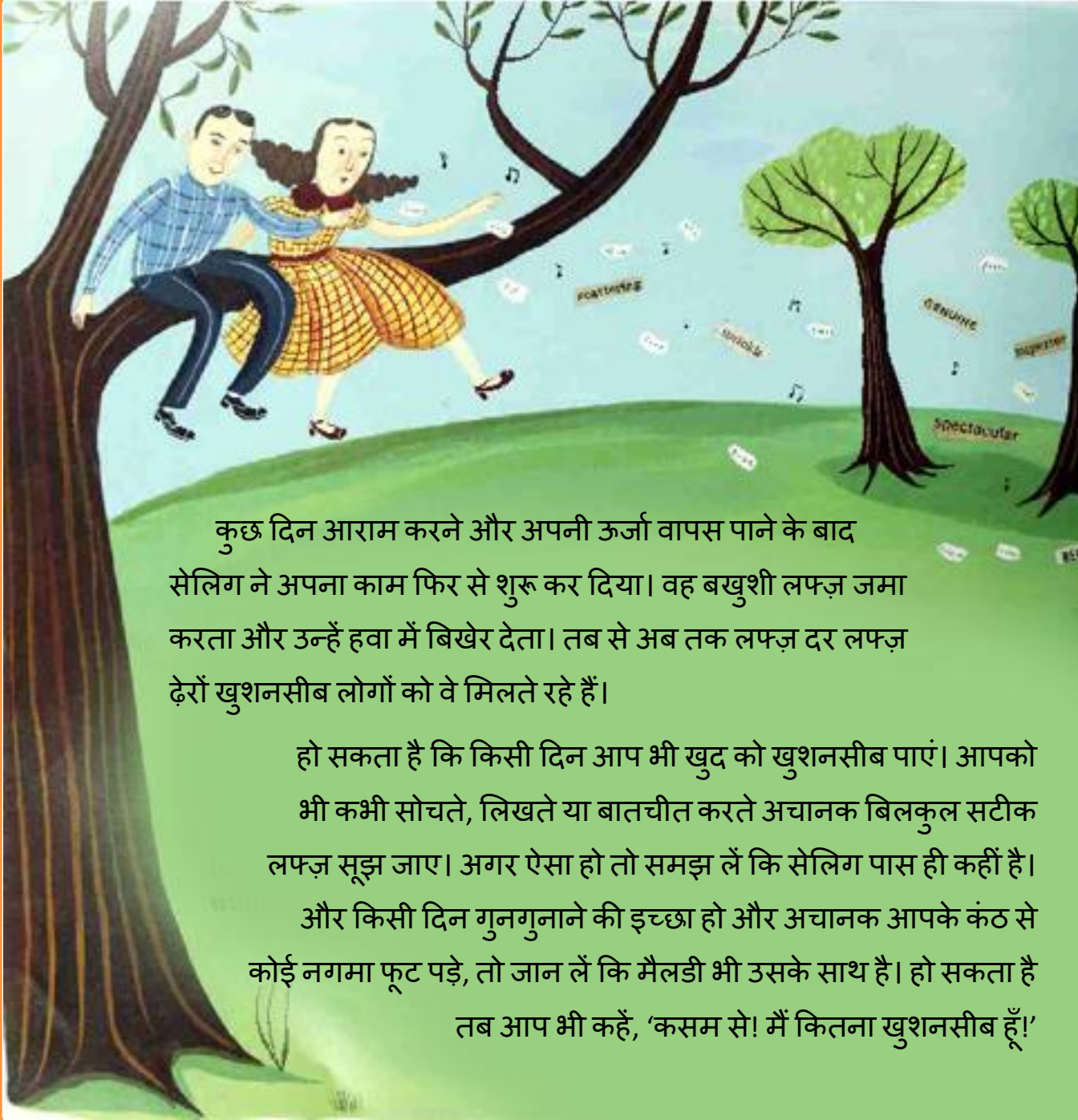
उस सुर का पीछा करने पर सेलिग को झील के किनारे बैठी एक युवती दिखी जो वीणा बजा रही थी। अचानक उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। *थर्राती* आवाज़ में उसने कहा 'क...क...क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ? आ...आ...आपका नाम क्या है।'

'लोग मुझे मैलडी कहते हैं,' उसने मानो गाते हुए कहा। उसके शब्दों की *मोहकता* में घुले उसकी आवाज़ का संगीत सेलिग को मीठा गीत-सा लगा।

कहते हैं कुछ लोगों को पहली नज़र में इश्क हो जाता है पर यह पहली बार एक-दूसरे की आवाज़ों को सुनने से उपजा प्रेम था। दोनों साथ-साथ सेलिग के शहर, उसकी माँ और पिता के पास लौटे। क्या *पुनर्मिलन* हुआ! सेलिग की माँ की उन्हें देख बाँछें ही खिल गईं। इस फिक्र से कि दोनों दुबले नज़र आ रहे हैं उन्होंने सेलिग के पसंदीदा पकवान बनाए - भुना गोश्त, गुलगुले, आलू बुखारे का केक, भरवाँ स्ट्रूडल मिठाई और मैकरून बिस्कुट। और उनके थके पैरों को आराम देने के लिए सेलिग के पिता ने मज़बूत जूते गाँठे।
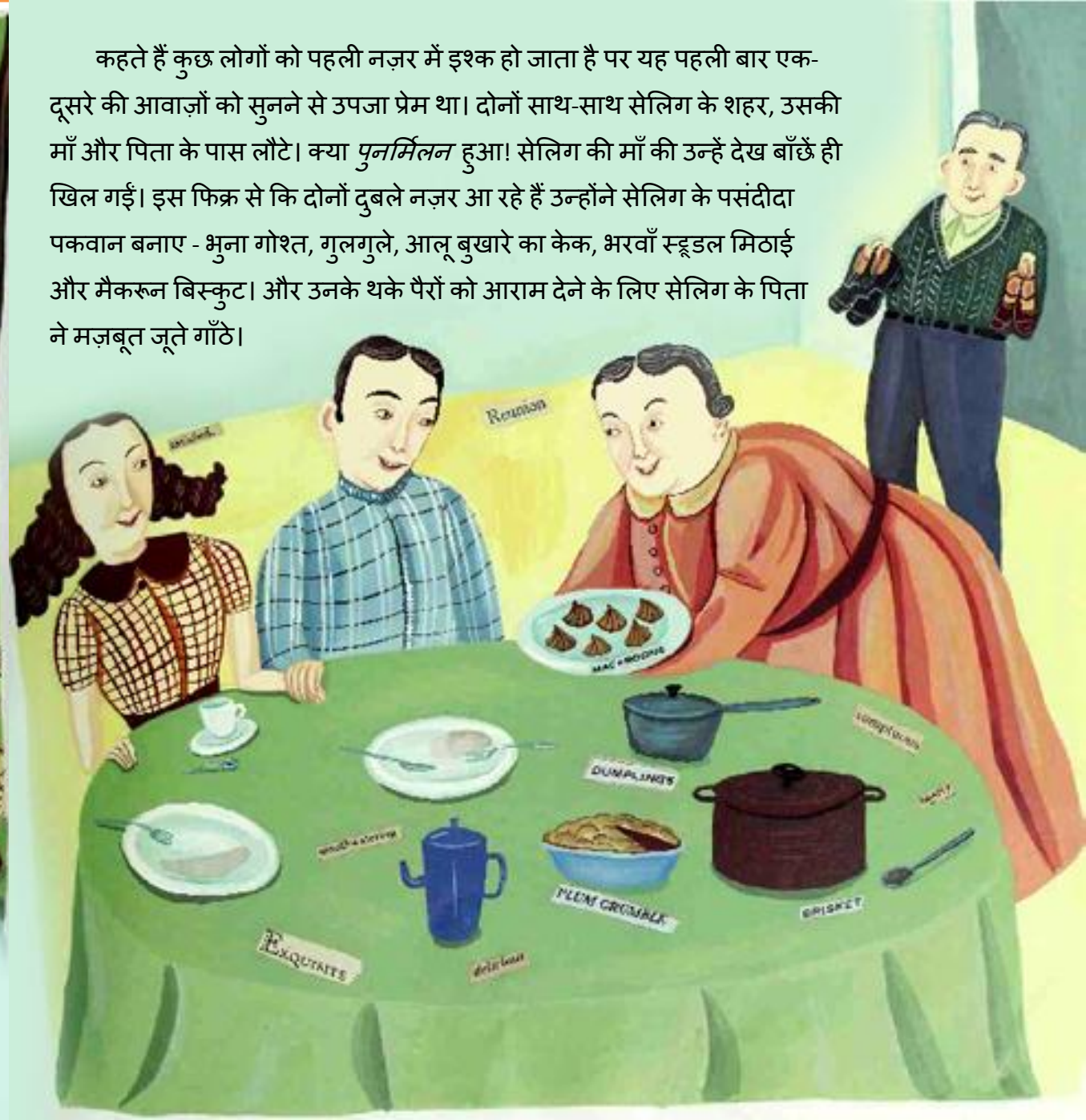
कुछ दिन आराम करने और अपनी ऊर्जा वापस पाने के बाद सेलिग ने अपना काम फिर से शुरू कर दिया। वह बखुशी लफ़्ज़ जमा करता और उन्हें हवा में बिखेर देता। तब से अब तक लफ़्ज़ दर लफ़्ज़ ढ़ेरों खुशनसीब लोगों को वे मिलते रहे हैं।

हो सकता है कि किसी दिन आप भी खुद को खुशनसीब पाएं। आपको भी कभी सोचते, लिखते या बातचीत करते अचानक बिलकुल सटीक लफ़्ज़ सूझ जाए। अगर ऐसा हो तो समझ लें कि सेलिग पास ही कहीं है। और किसी दिन गुनगुनाने की इच्छा हो और अचानक आपके कंठ से कोई नगमा फूट पड़े, तो जान लें कि मैलडी भी उसके साथ है। हो सकता है तब आप भी कहें, 'कसम से! मैं कितना खुशनसीब हूँ!'